Vol 5 Issue 11 August 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

Review Of Research

वारलीः जाति, बोली और संस्कृति

डॉ.उत्तम पटेल
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला–वलसाड (गुजरात)

1. वारली जातिः

1.1 मूल निवास–स्थान–

दक्षिणी गुजरात के आदिवासियों में वारली भी एक मुख्य जाति है। ये आदिवासी आजादी पूर्व मुंबई के ठाणा जिले के पूर्वोत्तर तथा जवाहर स्टेट, सूरत एजन्सी, दमण, धरमपुर तथा वांसदा स्टेट एवम् नाशिक के पूर्व के सह्याद्री विस्तार में रहते थे। मान्यता है कि खानदेश के कुछ भील समूह ही बाद में वारली कहे गये। आर. इ.अथोंवेन तथा लथन मानक विद्वानों ने वारली जाति को भीलों की उपजाति कहा है। इनके तीन भेद बताये गए हैं– 1.मुर्डे 2.डावर और 3.निहीरे। इस रूप में यह भील जाति की ही एक उपजाति है, जो सिर्फ खानदेश में ही नहीं, बल्कि गुजरात के उत्तरी भाग में भी बडी संख्या में हैं। ये लोग लंबे समय तक भीलों से जुडे रहे, जिसके परिणाम स्वरूप भीलों की संस्कृति का इन पर गहरा प्रभाव है।

ये विन्ध्य और सतपुडा पहाड़ के निकट रहते थे। बाद में खानदेश में सतपुडा पहाड़ पर ये स्थायी हुए। इसलिए इन्हें सतपुडा के मूल निवासी माना जाता है। किन्तु कुछ वारली लोग दमण केन्द्र प्रदेश में आये नामनगर अथवा नगरहवेली को अपना मूल स्थान बताते हैं। ये उत्तर से धरमपुर एवम् दमण में जा बसे। कपराडा तालुका के कोरवड, कापुरनिया, कोसबाडी, भांडवळ, तामाछडी, कपराडा, दांदवल, पीरमाळ तथा धरमपुर तालुका के धामणी, मांकडबान, पींडवळ, गडी–बिल्धा आदि गाँवों में इनकी आबादी अधिक है तो अन्य गाँवों में कम। कोरवड गाँव में तो इन ही की आबादी है।

माना जाता है कि ये वारालत (Varalat) में रहते थे। कोंकण के उत्तरी हिस्से को Varalat कहते थे। सात प्रकार के कोंकण–केरल, तुलाव, गोवरासिरा, कोंकण, केराहत, वारालत और बारबर में से एक वारालत है। ये आदिवासी वहाँ रहते थे और बाद में भी वहीं रहने लगे। एक मान्यता के अनुसार वारली जाति की आज बावनवीं पीढी चल रही है।

1.2 वारली–कुलः

वारली अधिकतर पहाड़ी प्रदेशों में रहते हैं। इनकी भौगोलिक परिस्थितयाँ बहुत अजीब होती हैं। इसलिए यह संभव नहीं है कि इनके एक मुहल्ले में रहनेवाले लोग एक ही गोत्र के हों। वारली जाति के कुल हैं – खानिये, बरफ, गुनगुनिया, माळा, कुँवर, ओझरे, पागी, मसिया, भोगिया, भावर, आसारिया, घांटव, कांकड, कांकवा, घटका, दोडका, मोकासी, वतार, मुंहुंडकर, जांजर, नेवळ, तुबडा, धुमाड, वळवी,, भांगर, जाधव,किरकिरे, निबौरे, बांगड़ , अगारी, अल्बाड,कामडी, कानत, काकड, कनुजा, कडु, गुडकी (मांडवखडक) गोंड, गिमभल, तुमडा, जाबर, झिमना, जिरवल, झांझर,डोंगरकर, दुपाडा, दबकिया, धामोडिया, निम्बारा, जीरवल, मुकना, मुथाना, मोकाशी, मोहवर्या, वाघमार्या, बारिया, भँवर, वड, वधाली, सुरूम, शिंगडा, आदि। खानिये कुल का नाम खानदेश से आये होने के कारण पडा।

1.3 वारलीः शब्द की व्युत्पत्ति व अर्थ–

प्रसिद्ध मराठा इतिहासकार श्री वी.के.राजवाड के मतानुसार कात्यायन ने वार्तिक में व्यास और निषाद के साथ श्वरूडश नाम के अंतर्गत वारली शब्द का प्रयोग अनार्य जाति के लिए किया है। उनके मतानुसार वारली शब्द की व्युत्पत्ति– वारुड →वारुडकी →वारुलई →वारुली →वारली हुआ।

डॉ.विल्सन के मतानुसार Varal शब्द का अर्थ है– A tilled patch of land. अर्थात् भूमि का झुकाववाला खंड या टुकडा। और जो लोग ऐसी भूमि पर कृषि करते थे उन्हें वाराली या वारली कहा गया। इनके मतानुसार तो वारली मूलतः कोंकणा आदिवासी ही थे। दक्षिण में सात प्रकार के कोंकणा रहते थे इनमें से जो कोंकणा वारलात में रहते थे, वे वारली कहलाये। "दक्षिणेतील सात कोकणा पैकी वरलाट हया कोकणात राहणारे ते वारली।"

पहाड़ की झुकाववाली जमीन के मालिक वारली होते हैं जिसमें नागली और वरई (एक प्रकार का धान्य) की फसल होती है। जबकि पहाड़ की समतल भूमि जमींदार की होती है, जिसमें चावल की फसल होती है। वारली आदिवासी जिस जमीन पर खेती करते हैं, उसकी पूर्व तैयारी के रूप में, वर्षा के मौसम से पहले उसे पेड़ की बडी–बडी डालियाँ या झाड़ – झंखाड़ काटकर, उसके उठाकर पहाड़ पर ले जाया जा सके, उतने बोझ की बडी गठरियाँ, जिसे ये लोग कवळी कहते हैं, बनायी जाती है। जिसके सूख जाने पर सूळी (एक लकडी के उपर एक फट्टा बाँधा जाता है जिसके ऊपर गठरी रखी जाती है। फट्टे के नीचे का भाग शिर पर रख, लकडी को हाथ से पकड़कर उठाया जाता

है।) से उठाकर खेती की भूमि पर डाला जाता है। इसे डालने से पहले उस भूमि की सफाई की जाती है अर्थात् उसमें पत्थर आदि हो तो उसे निकाल दिया जाता है जिसे 'जागा करना' कहते हैं। उसके बाद गठरियों पर थोडी मिट्टी डाली जाती है ताकि उसे जलाने पर राख हवा से उड़ न जाय। चावल की फसल के लिए जलायी जानेवाली भूमि को 'आदर' तथा नागली की फसल के लिए जलायी जाने वाली भूमि को 'डाहीं' कहते हैं। झाड–झंखाड जलाने की इस क्रिया के लिए कहीं 'वारल' (Waral) तो कहीं 'वावर' (Wavar) शब्द का प्रयोग होता था।

1.4 वारली जातिः उत्पत्ति विषयक मत–

इस जाति के लोगों को इतना ख्याल तो अवश्य है कि वारली नाम उनके व्यवसाय से प्रगाढ़ रूप से जुडा हुआ है। ये स्वयं को कुलंबी किसान मानते थे। मरसिया (मृत्यु विषयक गीतों) में रोगी मनुष्य को हमेशा कुलंबी कह कर संबोधित किया जाता था। इस जाति के लोगों का मानना है कि अलग–अलग जातियों का निर्माण विधाता ने किया है। एक बार विधाता ने मानव को भेंट दी। कुछ पसंदीदा लोगों को भेंट में पुस्तक मिली, वे ब्राह्मण हुए। कुछ लोगों को फावडा मिला, वे माली बने। कुछ अन्य लोगों को बांस मिला, वे हरिजन कहलाये। कुछ को धौंकनी मिली, वे लुहार बने। वारली को हल मिला, अतः वह कुलंबी कहलाया। कुछ वारली लोगों का मानना है कि विधाता ने सभी जातियों का सर्जन किया किन्तु उनकी परेशानी दूर नहीं हुई। तब अंत में वारलियों का सर्जन करने पर उनकी परेशानी दूर हुई थी। इस कारण वे अपने को निम्न मानते हैं। उनका यह भी मानना है कि पुराने जमाने में उनका कोई राजा नहीं था। किन्तु ये स्वयं को एक महान ऋषि, जिनके लंबे–लंबे बाल थे और पहाड़ की गुफा में रहते थे, की संतान मानते हैं।

इन लोगों का यह भी मानना है कि त्रेता युग में राम राजा थे जब कि हनुमान, शबरी, बाली, सुग्रीव आदि वारली जाति के पूर्वज थे। रावण भी इनसे डरता था। बाली को राम ने छल से मारा था। यही राम द्वापर में कृष्ण के रूप अवतारी हुए। तब त्रेतायुग का बाली शिकारी के रूप में द्वापर में जन्मा था और पेड़ के नीचे पैर पर पैर चढाये बैठे कृष्ण के पैर में बाण मार कर वह पिछले जन्म का प्रतिशोध इस दूसरे जन्म में पूरा करता है।

1.5 वारलियों की जनसंख्या–

१९३१ में इन वारली लोगों की आबादी ठाणा जिले में ११८,८४९, जवाहर जिले में २७,१७१, बॉम्बे सुबुरबन में ४,५६६, सुरत में १,५८५, वांसदा में ५,३१५, धरमपुर में ३१,०८९, नाशिक में १२,६८५ तथा खानदेश व अन्य भागों में ५,७९१ थी। १९४१ में हुई जनगणना के अनुसार उंमरगाँव तालुका में इनकी आबादी ३८,११७ थी तो दहाणु में ३०,०३८, पालघर में ११,३०२, वरई में १५,५३६, भिवंडी में ५,६१७, वाडा में ८,६१६, मोखाडा में १०,५३२, ठाणा में २,६८८, शाहापुर में २,१९०, कल्याण में २०४ और मुरबाड में ७ थी। १९८१ की जनगणना के अनुसार में गुजरात में इनकी आबादी १,५२,६८३ थी। 2001 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या 2,55,271 थी। जो गुजरात के आदिवासियों की कुल आबादी का 3.4 प्रतिशत थी। वलसाड जिले में यह जनजाति 211937 जनसंख्या के साथ दूसरे स्थान पर थी। धोडिया जनजाति 257959 जनसंख्या के साथ पहले स्थान पर थी। 2001 की जनसंख्या के आधार पर वारलियों में साक्षरता का दर गुजरात के आदिवासियों की कुल आबादी में 32.1 प्रतिशत था। पुरूषों का साक्षरता दर 42.1 और स्त्रियों का 22.2 प्रतिशत था।

2. वारली बोलीः

जिन गाँवों में सिर्फ वारली जाति के ही लोग बसे हैं उनकी बोली को 'दांवरी' या 'दावर' कहते हैं। सिल्वासा, वेरी भवाडा, ओझरडा, चांदवेगण गाँवों में यह बोली जाती है। जहाँ ये लोग कुंकणा जाति के लोगों के साथ बसे हैं उसका रूप कुंकणा बोली मिश्रित है। आज इस बोली को जाति के नाम पर से वारली बोली ही कहते हैं। कपराडा, दमण, उंमरगाँव प्रदेश भौगोलिक रूप से महाराष्ट्र से जुड़े होने के कारण इस बोली पर मराठी भाषा का गहरा प्रभाव है। इसकी कोई अलग लिपि नहीं है। यह भी धोडिया और कुंकणा बोली के समान कैथी से मिलती–जुलती लिपि में लिखी जाती है जिसका प्रयोग गुजराती के लिए होता है। इसमें सिर्फ मौखिक साहित्य प्राप्त होता है। वारली बोली के तीन रूप माने जाते हैं–1.वारली 2.डावरी और 3.अर्ध डावरी।

कुंकणा और वारली बोली में समानता होते हुए भी कुछ भिन्नता है। जैसे हिंदी कहाँ शब्द को वारली में कठ और कुंकणा बोली में कोठ कहा जाता है। हिंदी नहीं श्ब्द के लिए वारली बोली में अंह और कुंकणा बोली में नांय शब्द का प्रयोग होता है। कपराडा तहसील में वारली, कुंकणा और कोलचा बोली बोली जाती है। जिस गाँव या विस्तार में वारलियों की आबादी दूसरे आदिवासियों से अधिक हो, वहाँ शुद्ध वारली बोली का प्रयोग होता है। जहाँ वारली और कुंकणा आदिवासियों की आबादी हो वहाँ वारली और कुंकणा बोली का मिश्रित रूप का प्रयोग देखा जा सकता है। कोलचा आदिम जनजाति की आबादी कम होने के कारण वे वारली–कुंकणा मिश्रित बोली का ही प्रयोग करते हैं।

प्रस्तुत है वारली बोली का एक प्रसिद्ध लोक–गीत1.

केम्ब चे पाहेंखलहुन साले
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी।
निघले सात नयीव साले (2)
चालले झरा झरी,
साले चालले झरा झरी।
चालले झराझरीव साले,
चालले झरा झरी,
साले चालले झरा झरी।

Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

केम्ब चे ...
पार नार दोनही नयी,
भेगुवर भेगे झाले,
साले भेगुवर भेगे झाले।
भेगुवर भेगे झालेव साले,
भेगु त कीगळली,
साले भेगु त कीगळली।
केम्ब चे ...
भेगु त कीगळली व साले,
तुगलेनी जबान दिलह,
साले तुंगलेनी जबान दिलह।
बायको वरहुन कायव जासी,
मरदा वरहुन ये,
साले मरदा वरहुन ये।
केम्ब चे ...
जसी च हलपन टाक व साले,
तसा च तूगला वाढ,
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
निरुगडी संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
वाळहोंट संयदान टाकुं दे,
माल वाळहोंठ संयदान टाकुं दे।
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
मांछी संयदान टाकुं दे,
माल मांछी संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
फोंफेड संयदान टाकुं दे,
माल फोंफेड संयदान टाकुं दे।
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
छिंपे संयदान टाकुं दे,
माल छिंपे संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
फेदरा संयदान टाकुं दे,
माल फेदरा संयदान टाकुं दे।
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
दिंवडां संयदान टाकुं दे,
माल दिंवडां संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड रे पाठी चे भावा,
सेनोरी संयदान टाकुं दे,
माल सेनोरी संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे पाहेंखलहुन साले
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी।
निघले सात नयीव साले,
चालले झरा झरी,
साले चालले झरा झरी।
चालले झरा झरीव साले,
दरे चे दिपाखलहुन,
साले दरे चे दिपाखलहुन।

Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

केम्ब चे पाहेंखलहुन साले
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी।

अनुवादः (एक सखी दूसरी से कहती है) – केम्ब नामक पहाड़ की तलहटी से सात नदियाँ – पार, नार, कोलक, तान, मान, पथरी और दमणगंगा – निकली हैं। इनमें पार व नार नदियाँ साथ–साथ बहतीं हैं। इनके मार्ग में दो पर्वत भेगु और तुगला पड़ते हैं। पार ने पहले भेगु पर चढ़ने की कोशिश की। किन्तु भेगु पहाड़ ने नारी जाति के होने के कारण पुकार मचा दी। जो तुगला पहाड़ ने सुनी। उसने पार से कहा कि तुम नारी पर से जाने का प्रयत्न क्यों कर रही हो? तुम्हें जाना ही है तो मुझ (मर्द) पर से क्यों नहीं जातीं। और पार तुगला पर चढ़ने का प्रयत्न करती है। किन्तु तुगला समुद्रकी लहरों के समान ऊँचा होता जाता है। परिणाम वह चढ़ नहीं पाती। अतः वह पहाड़ से बिनती करती है कि हे मेरे छोटे भाई ! थोड़ा तो झुक ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ। पहाड़ थोड़ा झुकता है और पार नदी उस पर से बहने लगती है। वह चाहती है कि उसके निशान पहाड़ पर हमेशा बने रहे। अतः बहते–बहते वह तुगला पहाड़ पर पेड़,रेत, मछली, फोफडे (मछली की तरह का एक जीव), शंख, नील (पानी के ऊपर उगने वाली एक वनस्पति),साँप (पानी में रहनेवाले),सेनोरी (नदी तट में रेत में उगने वाली एक वनस्पति) आदि छोड़कर समुद्र से मिलने चल पड़ती है।

विशेषताएँ:

1.प्रस्तुत गीत विवाह–गीत है। यह वारली–समाज का लोकप्रिय गीत है क्योंकि इसमें पार व नार नदियों तथा भेगु व तुगला पहाड़ों का वर्णन है। धरमपुर से दक्षिण–पूर्व में लगभग 15 कि. मी. की दूरी पर धामणी नामक जंगल है। धामणी और उसके पास के गाँव वेरी भवाडा की सीमा पर नार नदी पार में समा जाती है।

2. मान्यता है कि महाराष्ट्र के केम्ब नामक पहाड़ से सात नदियाँ निकलीं, जिनमें पार व नार के अतिरिक्त अन्य पाँच नदियाँ हैं। ये सब पश्चिम की ओर बहती हैं। आगे जाकर धामणी और वेरी भवाडा के पास पार और नार एक हो जाती हैं। ऐसी मान्यता है कि वर्षा के मौसम में बाढ़ आने पर पार या नार एक–दूसरे की राह देखती हैं और दोनों में से कोई एक धीरे आ रही हो तो दूसरी बिना उसे मिले आगे नहीं बढ़ती। अर्थात् अगर पार धामणी तक बहते–बहते आ गई हो तो जहाँ तक नार बहते–बहते धामणी तक नहीं आयेगी, पार उसकी राह देखती रुकी रहेगी। और नार के आने के बाद ही दोनों मिलकर आगे बहेगी। और अगर इनमें से कोई एक नदी दूसरी की, बिना राह देखे ही आगे बढ़ जाय, तो मान्यता है कि वह साल अच्छा नहीं जाता अर्थात् उस साल अतिवृष्टि होगी या अकाल पडेगा या महामारी फैलेगी।

लोगों का ऐसा भी मानना है कि पार नदी भेगु पहाड़ को तोड़कर कपराड़ा (वलसाड़ जिले का एक तालुका। यह धरमपुर ही का विस्तार था। तब धरमपुर एशिया का सबसे बड़ा तालुका था। कुछ साल हुए कपराड़ा को तालुके का दर्जा दिया गया है।) से होकर आगे कोलक नदी को मिलने वाली थी। (कोलक केम्ब से ही निकली थी किन्तु उसका स्वरूप अंतःसलिला का था। इसका स्रोत आज के कपराडा तालुका के कोलवेरा गाँव में स्थित एक पहाड़ में रहनेवाले चूहों के बिल से फूटा था। चूहे को ये लोग कोळवो कहते हैं। कोळवे के बिल से निकली होने के कारण इस नदी का नाम कोळब पडा। पहाड़ का नाम भी यही पड़ा। कोळब शब्द प्रयत्न–लाघव के कारण कोलक में परिवर्तित हो गया।) किन्तु जब पार ने भेगु पर से जाने का प्रयत्न किया तो उसने चीख–पुकार मचा दी। यह पुकार तुगला नामक पहाड़ ने सुनी और उसने पार से कहा कि भेगु तो तेरी ही जाति का है। अगर तुझे जाना ही है तो मुझ पर से होकर जा। और पार तुगला की ओर बढ़ने लगी। तुगला के पास जाकर उसने उस पर चढ़ना शुरू किया। जैसे–जैसे वह आगे बढ़ती तुगला भी ऊपर उठता जाता। पार बार–बार प्रयत्न करने पर भी तुगला पर नहीं चढ़ पाई। अंततः पराजय स्वीकार कर,पहाड़ को भाई! कहकर उसने बिनती की कि भाई! थोड़ा झुक जाओ, ताकि मैं कुछ निशान तो छोड़ जाऊँ। तब तुगला झुका और पार नदी निशान छोड़कर आगे जाकर समुद्र में समा गई। आज भी तुगला पहाड़ पर पार के निशान देखने मिलते हैं।

3. पहाड़ी विस्तार में रहनेवाले आदिवासियों का नदी, पहाड़ आदि प्राकृतिक तत्वों से कितना प्रगाढ़ संबंध है, वह इस गीत में दर्शनीय है।

4. भाई–बहन के संबंध की प्रगाढ़ता इसमें दर्शनीय है। पार द्वारा तुगला को छोटा भाई कहने पर वह झुक जाता है। पुरूष का अहम् भाई शब्द सुनकर कैसे विगलित हो जाता है !

5. पार और नार का यह गीत गाने वाले इन आदिवासियों में गजब की एकता है। वे भी इन नदियों की तरह साथी की राह देखकर साथ में ही आगे बढ़ते हैं।

निष्कर्ष–दक्षिणी गुजरात के आदिवासियों में वारली भी एक मुख्य जाति है। ये आदिवासी आजादी पूर्व मुंबई के ठाणा जिले के पूर्वोत्तर तथा जवाहर स्टेट, सूरत एजन्सी, दमण, धरमपुर तथा वांसदा स्टेट एवम् नाशिक के पूर्व के सह्याद्री विस्तार में रहते थे। यह भील जाति की ही एक उपजाति है जिसके परिणाम स्वरूप भीलों की संस्कृति का इन पर गहरा प्रभाव है। ये विन्ध्य और सतपुडा पहाड़ के निकट रहते थे। बाद में खानदेश में सतपुडा पहाड़ पर ये स्थायी हुए। इसलिए इन्हें सतपुडा के मूल निवासी माना जाता है। किन्तु कुछ वारली लोग दमण केन्द्र प्रदेश में आये नामनगर अथवा नगरहवेली को अपना मूल स्थान बताते हैं। ये उत्तर से धरमपुर एवम् दमण में जा बसे। कपराडा तालुका के कोरवड, कापुरनिया, कोसबाडी, भांडवळ, तामाछडी, कपराडा, दांदवल, पीरमाळ तथा धरमपुर तालुका के धामणी, मांकडबान, पींडवळ, गडी–बिल्धा आदि गाँवों में इनकी आबादी अधिक है तो अन्य गाँवों में कम। कोरवड गाँव में तो इन ही की आबादी है। इनके 60 से अधिक कुल हैं। ये लोग भूमि का झुकाववाला खंड या टुकडे वाली भूमि पर कृषि करते थे अतः उन्हें वाराली या वारली कहा गया। ये स्वयं को एक महान ऋषि की संतान मानते हैं। इनकी बोली को 'दांवरी' या 'दावर' कहते हैं। भौगोलिक रूप से महाराष्ट्र से जुड़े होने के कारण इस बोली पर मराठी भाषा का गहरा प्रभाव है। इसमें सिर्फ मौखिक साहित्य प्राप्त होता है। इसमें सिर्फ मौखिक साहित्य प्राप्त होता है। लोक साहित्य की दृष्टि से वारली बोली बहुत ही समृद्ध है। लोकगीत व लोक–कथाओं की इसमें भरमार है।

Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

संदर्भ–संकेत–

1.Enthoven,R.E. (1990),The Tribes and Castes of Bombay,Vol.1.p.156,New Delhi, Asian Educational Services
2. राजवाडे,विश्वनाथ काशीनाथ (1922), महिकावाटीची बखार–1, पृ–८२, पुणेए वरदा प्रकाशन,सेनापती बापट मार्ग
3. Save, K.J. (1945) The Varlis, p.4, Bombay, Padma Publication Ltd.
4. http://encyclopedia-balaee-com

डॉ.उत्तम पटेल
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला–वलसाड (गुजरात)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org